Dr. M. K. Jha
Dept of Sociology
V.S.J College
Rajnagar.

B.A part-1
Sociology Hons
paper-1
Introduction to sociology

Question- प्रस्थिति से आप क्या समझते हैं? प्रस्थिति के प्रमुख निर्धारक तत्वों की विवेचना कीजिए।

Ans- सामाजिक व्यवस्था में व्यक्ति को विभिन्न नियमों और मूल्यों के द्वारा जो पद प्राप्त होता है। समाजशास्त्रीय भाषा में उसी को व्यक्ति का प्रस्थिति (status) कहा जाता है अर्थात प्रस्थिति व्यक्ति की समूह अथवा समाज में पद की सूचक है। यह पद व्यक्ति को समाज द्वारा स्वतः ही प्रदान किया जा सकता है या व्यक्ति अपने गुणों एवं योग्यता के आधार पर प्राप्त करता है।

R. Bierstedt के अनुसार "society is a network of statuses" अर्थात समाज सामाजिक प्रस्थितियों का जाल है अनेक प्रस्थितियाँ व्यवस्थित रूप से मिलकर सम्पूर्ण समाज का निर्माण करती है। समाज में उनके महत्व एवं उपयोगिता के आधार पर ही प्रस्थितियों के साथ सम्मान एवं शक्ति जुड़ी हुई होती है। प्रत्येक सामाजिक प्रस्थिति एवं भूमिका का सम्बन्ध सामाजिक आदर्शों, मूल्यों एवं मानदण्डों से होता है। एक प्रस्थिति को धारण करने वाला व्यक्ति वैसा ही व्यवहार करता है जैसा उन प्रस्थिति से सम्बन्धित मानदण्डों द्वारा अपेक्षित और मान्य होता है।

Elliott and Merrill के अनुसार "प्रस्थिति व्यक्ति का वह पद है जिसे व्यक्ति किसी समूह में अपने लिंग, आयु, परिवार, वंश, व्यवसाय, विवाह अथवा प्रयत्नों आदि के कारण प्राप्त करता है। R. Bierstedt के अनुसार 'A status is simply position in society or in group' अर्थात एक व्यक्ति को समूह और समाज में मिलने वाले स्थान का नाम प्रस्थिति है।

K. young के अनुसार
प्रत्येक समाज अथवा समूह में प्रत्येक व्यक्ति को कुछ कार्यों को सम्पन्न करना होता है जिसके

नाम शक्ति तथा प्रतिष्ठा की कुछ मात्रा जुड़ी होती है शक्ति तथा प्रतिष्ठा की जिस मात्रा का हम प्रयोग करते हैं वही उसकी प्रस्थिति है।

उपरोक्त परिभाषा से स्पष्ट होता है कि एक व्यक्ति समाज द्वारा मान्यता प्राप्त जिन अनेक पदों पर रहकर अपना कार्य करता है इन्हीं के आधार पर समाज में उसे एक विशेष पद या स्थान मिलता है। इसी पद को व्यक्ति की प्रस्थिति कहा जाता है।

सामाजिक प्रस्थिति के दो प्रकार होते हैं

1. प्रदत्त प्रस्थिति (ii) अर्जित प्रस्थिति

(i) प्रदत्त प्रस्थिति - प्रदत्त प्रस्थिति समाज द्वारा व्यक्ति को स्वयं प्रदान करने वाली स्थान एवं पद है। जो जन्म के आधार पर ही समूह में एक स्थान मिल जाती है

ii. अर्जित प्रस्थिति :- जब व्यक्ति स्वयं अपनी योग्यता, कुशलता और प्रयत्नों द्वारा समाज एवं समूह में एक स्थान प्राप्त करता है तो वह अर्जित प्रस्थिति कहलाता है।

प्रस्थिति निर्धारण के आधार :-

समाज में प्रत्येक व्यक्ति का प्रस्थिति निर्धारण दो आधार पर किया जाता है जैसे - एक प्रदत्त प्रस्थिति के आधार पर तो दूसरा अर्जित प्रस्थिति के आधार पर।

(A) प्रदत्त प्रस्थिति - निर्धारण के प्रमुख आधार निम्न हैं।

(1) लिंग भेद :- लिंग के आधार पर पुरुष और महिला में दो प्रस्थिति अलग-अलग बनते हैं। भारत में पुरुषों को साहस, शक्ति और धैर्य के कारण महिलाओं की अपेक्षा उच्च सामाजिक प्रस्थिति प्रदान की जाती है।

(2) आयु भेद :- आयु का विभाजन शिशु बालक, युवा, प्रौढ़ और वृद्ध आदि स्तर में किया जाता है। भारत में वृद्धों को विशेष अनुभव, ज्ञान एवं कार्य विचार

के कारण बच्चों के अपेक्षा उच्च एवं आदर की प्रस्थिति मिलता है और बच्चों को एक सामान्य स्थान मिलता है।

3. नातेदारी — व्यक्ति को नातेदारी के आधार पर अनेक प्रस्थितियाँ प्राप्त होता है। नातेदारी रक्त सम्बन्ध एवं वैवाहिक सम्बन्ध पर कई प्रस्थिति को जन्म देता है जैसे माता, पिता, भाई, बहिन, चाचा, चाची, पत्नी, दादा, ससुर आदि।

4. जन्म — व्यक्ति के जन्म किस परिवार, जाति एवं प्रजाति में हुआ है, इस आधार पर भी प्रस्थिति का निर्धारण होता है। शाही घराने एवं उच्च जाति का जन्म लेने वाले की सामाजिक प्रस्थिति निम्न परिवारों और अस्पृश्य जातियों के लोगों की तुलना में ऊँची रही है।

5. जाति और प्रजाति — भारत में जाति व्यक्ति का प्रस्थिति निर्धारण का प्रमुख आधार है ऊँची-जातियों में जन्म में जैसे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य में जन्म लेने वालों की प्रस्थिति शुद्र और अछूत जाति में जन्म लेने वालों से ऊँची समझी जाती है। इस प्रकार श्वेत प्रजाति का स्थिति उच्च और काला प्रजातियों का स्थिति निम्न माना गया है।

(B) अर्जित प्रस्थिति के द्वारा निर्धारण — अर्जित प्रस्थिति के निर्धारण के कुछ प्रमुख आधार निम्न प्रकार है:-

1. सम्पत्ति — व्यक्ति के पद का निर्धारण करने में सम्पत्ति का महत्वपूर्ण कारक है। गरीब की तुलना में पूंजीपति का स्थान उच्च होता है। आधुनिक युग में भौतिक सुख सुविधाए उपभोग करने वालों का उच्चा माना जाता है।

2. शिक्षा — अशिक्षित की तुलना में शिक्षित व्यक्तियों की प्रस्थिति उच्ची होती है। अप्रमात शिक्षा भी प्रस्थिति का निर्धारण करता है इसलिए शिक्षा के आधार पर डॉक्टर, अभियंता एवं प्राध्यापक का स्थान उच्चा होता है।

3. व्यवसाय — व्यवसाय व्यक्ति की सामाजिक प्रस्थिति निर्धारण करता है। जैसे ~~[illegible]~~

व्यवसाय के आधार पर D.M. B.D.O. इंजीनियर का स्थान चपरासी, मजदूर एवं कृषक की अपेक्षा ऊँचा होता है।

4. राजनीतिक सत्ता - प्रजातंत्र में शासक दल को स्थान विरोधी दल के अपेक्षा ऊँचा माना जाता है

5. उपलब्धियाँ - व्यक्ति परिश्रम एवं साहस से उच्च सामाजिक प्रस्थिति प्राप्त करता है जैसे खिलाड़ी, वैज्ञानिक, साहित्यकार, संगीतकार का स्थान इस आधार पर ऊँचा समझा जाता है।

6. विवाह: विवाह भी सामाजिक प्रस्थिति निर्धारण में एक आधार है जैसे विवाह के बाद पति-पत्नी का स्थान व्यक्ति को मिलता है वहीं दोनों परिवार के बीच जीजा, बहु, मामी जैसे कई सामाजिक पद स्पष्ट होने लगते हैं।

अतएव, सामाजिक प्रस्थिति का निर्धारण समाज में कई कारकों से होते हैं पहले समाज में प्रदत्त प्रस्थिति का महत्वपूर्ण स्थान था लेकिन प्रजातांत्रिक मूल्यों के कारण अर्जित प्रस्थिति द्वारा निर्धारक कारकों का महत्व एवं प्रभाव समाज में बढ़ा है।